CENTENARY OF SATISH GUJRAL

Satish Gujral was one of India's most distinguished creative luminaries—an acclaimed painter, sculptor, muralist, architect, and writer whose extraordinary body of work helped shape the artistic landscape of post-Independence India.

Born on 25 December 1925 in Jhelum, Punjab, British India (now in Pakistan), Satish Gujral belonged to a prominent Punjabi family. His father, Avtar Narain Gujral, held government office, while his elder brother, Inder Kumar Gujral, later served as the 12th Prime Minister of India. A severe hearing impairment in childhood limited his access to conventional education, making art both his refuge and his most powerful means of expression.

He began his artistic training at the Mayo School of Arts, Lahore, in 1939 with a focus on applied arts and subsequently studied at the Sir J.J. School of Art, Bombay. In 1952, he was awarded a scholarship to study at the Palacio de Bellas Artes, Mexico City, where he trained under renowned Mexican muralists whose influence profoundly shaped his artistic vision.

Over an illustrious career spanning more than seven decades, Satish Gujral explored themes of displacement, suffering, resilience, and human endurance, drawing deeply from the trauma of the Partition of India. His remarkable body of work encompassed paintings, monumental sculptures, murals, public installations, and architecture. His works were exhibited in major cities across the world, including New Delhi, Mumbai, London, Paris, New York, Tokyo, and several other international venues, establishing him as one of the foremost figures of modern Indian art.

Among his architectural masterpieces, the Embassy of Belgium in New Delhi stands as an internationally acclaimed landmark of twentieth-century modern architecture, exemplifying his ability to seamlessly integrate art, architecture, and sculpture.

In recognition of his exceptional contribution to Indian art and culture, Satish Gujral received numerous national and international honours, including the Padma Vibhushan in 1999. His life and creative journey have been documented through several films and retrospectives, most notably 'A Brush with Life', his acclaimed autobiography.

A symbol of extraordinary resilience, imagination, and creative excellence, Satish Gujral transformed personal adversity into a universal artistic language that continues to inspire generations. His emotionally profound, socially conscious, and architecturally significant legacy remains an enduring contribution to India's cultural heritage.

The Department of Posts is proud to issue a Commemorative Postage Stamp on the Centenary of Satish Gujral, celebrating the life, achievements, and enduring legacy of one of India's greatest artists, architects, and cultural visionaries.

Credits:

Stamp / First Day Cover / Brochure / Cancellation Cachet:	:	Shri Anuj Kumar
Text	:	Based on the content provided by the proponent

भारतीय डाक
डाक सेवा-जन सेवा

India Post
Dak Sewa-Jan Sewa

डाक विभाग

DEPARTMENT OF POSTS

सतीश गुजराल की जन्म शताब्दी

CENTENARY OF SATISH GUJRAL

विवरणिका BROCHURE

सतीश गुजराल की जन्म शताब्दी

सतीश गुजराल भारत के सर्व प्रतिष्ठ रचनाधर्मी दिग्गजों में से एक थे। इस महान चित्रकार, मूर्तिकार, भित्ति शिल्पी, वास्तुकार और लेखक ने अपनी सृजनशीलता के माध्यम से स्वतंत्रता पश्चात भारत के कला परिदृश्य को परिभाषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

25 दिसंबर 1925 को झेलम, पंजाब, ब्रिटिश भारत (अब पाकिस्तान में) में जन्मे सतीश गुजराल एक प्रतिष्ठित पंजाबी परिवार से थे। उनके पिता, अवतार नारायण गुजराल एक सरकारी अधिकारी थे, जबकि उनके अग्रज, इंदर कुमार गुजराल, कालांतर में भारत के 12वें प्रधान मंत्री बने। बचपन में एक दुर्घटना में उनकी श्रवण शक्ति इतनी प्रभावित हो गई कि वे सामान्य बच्चों की भांति औपचारिक शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाए; इस रिक्ति को उन्होंने कला के माध्यम से भरा और इसे ही अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बना लिया।

वर्ष 1939 में, उन्होंने 'एप्लाइड आर्ट्स' का अध्ययन करने के लिए 'मेयो स्कूल ऑफ आर्ट्स, लाहौर' में प्रवेश लिया; इस प्रकार उनका कला प्रशिक्षण शुरू हुआ। तत्पश्चात, वे सर जेजे स्कूल ऑफ आर्ट, बॉम्बे गए। वर्ष 1952 में, उन्हें मेक्सिको सिटी में स्थित 'पलासियो डी बेलास आर्टेस' के लिए छात्रवृत्ति प्राप्त हुई, जहां उन्होंने मेक्सिको के प्रसिद्ध भित्ति चित्रकारों के अधीन प्रशिक्षण प्राप्त किया। इन चित्रकारों का उनके कला संबंधी दृष्टिकोण पर गहन प्रभाव रहा।

सात दशकों से भी अधिक के अपने शानदार करियर के दौरान, सतीश गुजराल ने विस्थापन, पीड़ा और मानव की संघर्षशीलता व सहनशीलता जैसे विषयों पर विविधतापूर्ण चित्रकारी की। भारत के विभाजन की पीड़ा का उनके मन–मस्तिष्क और कार्यों पर गहन प्रभाव रहा। उनके कार्यों में पेंटिंग, भित्ति चित्र, सार्वजनिक स्थलों पर स्थापित की जाने वाली कलाकृतिया, मूर्तिकला, और वास्तुकला शामिल है। उनकी कृतियाँ नई दिल्ली, मुंबई, लंदन, टोक्यो, न्यूयॉर्क, पेरिस तथा कई अन्य अंतरराष्ट्रीय मंचों सहित दुनिया भर के प्रमुख शहरों में प्रदर्शित की गईं। इससे उन्हें आधुनिक भारतीय कला जगत की अग्रणी हस्ती के रूप में वैश्विक पहचान मिली।

20 वीं शताब्दी की आधुनिक वास्तुकला के एक प्रमुख नमूने के रूप में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त नई दिल्ली स्थित बेल्जियम–दूतावास, स्थापत्य कला के क्षेत्र में सतीश गुजराल की उल्लेखनीय उपलब्धियों में से एक है। यह कला, वास्तुशिल्प, और मूर्तिकला को आसानी से एकाकार कर देने की उनकी विलक्षण प्रतिभा का उदात्त उदाहरण है।

भारतीय कला और संस्कृति के क्षेत्र में सतीश गुजराल के अभूतपूर्व योगदान को सम्मानित करते हुए उन्हें वर्ष 1999 में पद्म विभूषण सहित तमाम राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय अलंकरणों से सम्मानित किया गया। सतीश गुजराल के जीवन और उनकी सृजन यात्रा पर कई फिल्मों और गतावलोकी चलचित्रों का निर्माण किया गया है। इनमें, उनकी आत्मकथा पर आधारित फिल्म 'ए ब्रश विद लाइफ' सर्वाधिक चर्चित है।

संघर्षशीलता, कल्पनाशीलता और उत्कृष्ट रचनाधर्मिता की प्रतिमूर्ति सतीश गुजराल ने अपने जीवन की प्रतिकूलताओं को ऐसी सशक्त कलात्मक अभिव्यक्ति प्रदान की, जो आज भी विश्व स्तर पर पीढ़ी दर पीढ़ी मानवता को प्रेरित कर रही है। भावनात्मक रूप से गहन, सामाजिक रूप से जागरूक और वास्तुशिल्प की दृष्टि से उत्कृष्ट उनकी कृतियाँ भारत की सांस्कृतिक विरासत का अभिन्न हैं।

डाक विभाग सतीश गुजराल की जन्म शताब्दी पर एक स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए गौरव का अनुभव करता है। यह डाक टिकट भारत के सर्वश्रेष्ठ कलाकारों, वास्तुकारों और सांस्कृतिक दूरदृष्टाओं में से एक सतीश गुजराल के अनुकरणीय जीवन, विलक्षण उपलब्धियों और चिर विरासत का प्रतीक है।

आभारः

डाक–टिकट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/विरूपण कैशे पाठ : श्री अनुज कुमार

: प्रस्तावक द्वारा प्रदत्त सामग्री पर आधारित

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्य	:	500 पैसे
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक टिकटें	:	305953
Stamps Printed	:	305953
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamps, Miniature Sheets, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00